शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वाक्य संरचना का अनिवार्य पहलू : पदान्विति

डॉ.आशा पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर
आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

भाषा का मानव जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वह हमारे अनुभवों विचारों भावों को परिभाषित करने और इस परिभाषित बोध को अभिव्यक्त एवं संप्रेषित करने का सशक्त एवं मूल माध्यम है। भाषा का आधार ग्रहण करके ही व्यक्ति समाज में विचार विनिमय करता है। व्यक्ति चाहे पढ़ा-लिखा है या अनपढ़, बच्चा है, बूढ़ा है या जवान है, स्त्री है या पुरूष है, ग्रामीण है या शहरी किसी भी वर्ग वर्ण का है या किसी भी देश या प्रांत का सबके द्वारा पग-पग पर भाषा का व्यवहार किया जाता है। यह सत्य है कि कथ्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, पर उसे सही, प्रभावशाली एवं सटीक ढंग से संप्रेषित करने का दायित्व भाषा के कंधों पर ही होता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं होती वह जीवन और व्यक्तित्व का विकास,परिष्कार करने वाली शक्ति भी होती है। भाषा अपने को प्रकट करने की कला भी है और ज्ञान की दुनिया में खुलता द्वार भी। विश्व में तमाम भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। भाषा का सौंदर्य मूलतः इस पर निर्भर करता है कि एक वक्ता अथवा लेखक के पास विपुल शब्द भंडार हो और उसे शब्दार्थ का सम्यक्ज्ञान हो। सही और शुद्ध संप्रेषण के लिए हर भाषा का अपना व्याकरण होता है, जिसमें उस भाषा के नियम निर्धारित होते हैं, जिनका अध्ययन-मनन प्रारंभिक स्तर पर ही प्रयोक्ता को कराया जाता है। उनका पालन करना उस भाषा के प्रयोक्ता के लिए अनिवार्य होता है। तभी वह भाषा का शुद्ध परिमार्जित एवं सटीक प्रयोग कर अपने हृदयगत भावों, विचारों आदि को समाज विशेष में बोलकर या लिखकर संप्रेषित करता है। हिंदी भाषा भी शुद्ध एवं सटीक प्रयोग के लिए नियमों से बंधी हुई है। भाषा वाक्यों से निर्मित होती है और वाक्य प्रयोग में कभी-कभी पदक्रम, लिंग वचन, कारक अन्विति संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं। कोई भाषा शुद्ध, सार्थक और संप्रेषणीय है, यह वाक्य में प्रयुक्त पदों के आपसी संबंधों पर निर्भर करता है। यह लेख हिंदी वाक्य संरचना के महत्वपूर्ण नियमों के संदर्भ में अन्वय अन्विति से संबंधित है।

बीज शब्द : *अन्विति, संप्रेषण, वाक्य-संरचना, कारक, अप्रत्यय कर्ता, व्याकरणिक, एकरूपता, समुच्चयबोधक।*

भूमिका

"वाक्य विशिष्ट क्रम से सजाए हुए ऐसे सार्थक शब्दों का समूह है, जिनमें परस्पर योग्यता, आकांक्षा, अन्वय तथा आसक्ति हो।"[1] वाक्य में अन्वय की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए डॉ.भोलानाथ तिवारी लिखते हैं कि वाक्य में "सभी बातें ठीक हों पर यदि शब्दों में अन्वय, (व्याकरण की दृष्टि से समान रूपता) न हो तो अर्थ तो समझ में आ जाएगा, पर वाक्य व्याकरणसम्मत या व्याकरण की दृष्टि से ठीक न होगा। जैसे हिंदी में यदि हम कहें 'उसकी लड़का का हाथ में डंडा थी।' तो भाव स्पष्ट है, पर वाक्य में व्याकरणिक एकरूपता नहीं है, अतः हिंदी के नियम के अनुसार यह वाक्य अशुद्ध है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इसका शुद्ध रूप होगा, 'उस के लड़के के हाथ में डंडा था।' इस प्रकार की आवश्यकता को अन्वय कहते हैं।"[2] अर्थात् "अन्वय का अर्थ है एक वाक्य में शब्दों (पदों) की आपस में अपेक्षित व्याकरण की दृष्टि से एकरूपता।"[3]

कामताप्रसाद गुरू "दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरूष, कारक, अथवा काल की जो समानता रहती है, उसे अन्वय कहते हैं।"[4]

हरदेव बाहरी के अनुसार "अन्वय का अर्थ है मेंल। वाक्य में पड़कर संज्ञा, क्रिया आदि पदों में परस्पर मेल।"[5]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर अन्वय/अन्विति का अर्थ है व्याकरणिक दृष्टि से एकरूपता, परस्पर संबद्धता या मेल। वाक्य में प्रयुक्त पदों में लिंग, वचन, पुरूष, एवं कारक के स्तर पर क्रिया के साथ एकरूपता/अनुरूपता होना ही अन्विति है। वाक्य में प्रयुक्त पद अपनी विशेषताओं से वाक्य के अन्य पदों को प्रभावित कर उनमें परिवर्तन लाते हैं, इसे ही वाक्य की अन्विति कहा जाता है। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले पद तभी सार्थक होते हैं, जब वे व्याकरणिक रूप से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। कर्ता के साथ कारक चिह्न/परसर्ग नहीं है और वह पुल्लिंग, एकवचन में प्रयुक्त है, तो क्रिया भी पुल्लिंग एकवचन में ही आनी चाहिए। लेकिन जब कर्ता के साथ कारक चिह्न/परसर्ग जोड़ देते हैं, तो क्रिया का संबंध कर्ता से टूट जाता है और यदि वहाँ कर्म है, तो क्रिया कर्म के लिंग, वचन के अनुसार आएगी। कर्ता और कर्म दोनों ही कारक चिह्न/परसर्गयुक्त हैं, तो क्रिया इन दोनों से मुख मोड़ लेती है। वाक्य के अन्य पदों विशेषण विशेष्य, संज्ञा, सर्वनाम, संबंध-संबंधी में भी अन्विति होनी चाहिए। विभिन्न भाषाओं में इसके विभिन्न रूप मिलते हैं। हिन्दी भाषा में अन्विति के कुछ विशेष नियम इसप्रकार हैं :

(क) कर्ता (उद्देश्य) और क्रिया की अन्विति

1 अप्रत्यय कर्ता अर्थात परसर्गरहित कर्ता (संज्ञा) की क्रिया कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार होती है। जब कर्ता के साथ कारक चिह्न (ने आदि) नहीं होता है, तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता है; जैसे :

i **सुरेश** ट्यूशन शाम को **पढ़ता** है। (परसर्ग रहित कर्ता पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एक वचन)

ii हमारे विद्यालय में सबसे अच्छा शतरंज **शालिनी खेलती** है। (परसर्ग रहित कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन- क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन)

iii **लड़कियाँ** लॉन में बैठकर आपस में बातें कर **रहीं हैं**। (परसर्ग रहित कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन- क्रिया स्त्रीलिंग बहुवचन)

iv **लड़के** हर सुबह पार्क में खेलने **जाते हैं।** (परसर्ग रहित कर्ता पुल्लिंग बहुवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

*यदि अप्रत्यय कर्ता (उद्देश्य) एकवचन है परंतु वह 'आदर योग्य' है, तो उसके साथ क्रिया के बहुवचन रूप का प्रयोग हो सकता है जैसे :

i **गुरूजी** हमें सन्मार्ग पर चलना **सिखाते हैं**। (परसर्ग रहित आदरणीय कर्ता - क्रिया बहुवचन।)

ii हमारे गाँव में एक **महात्मा** आया **करते थे।** (परसर्ग रहित आदरणीय कर्ता - क्रिया बहुवचन।)

iii **चाचाजी** कल सुबह बनारस **जाएँगे**। (परसर्ग रहित आदरणीय कर्ता - क्रिया बहुवचन।)

2 समान लिंग के एकाधिक, एकवचन अप्रत्ययकर्ता (प्राणिवाचक संज्ञाएँ) संयोजक सम्मुचयबोधक (**और, तथा, एवं** आदि) से जुड़े हों, तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में आती है जैसे :

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

i **सैनिक** और **पुलिस** देश की सुरक्षा के लिए सदा तत्पर **रहते हैं**। (क्रिया - पुल्लिंग बहु वचन)

ii **अध्यापिका** तथा **छात्रा** मिलकर परियोजना पर काम **रही हैं।** (क्रिया - स्त्रीलिंग बहु वचन)

iii ग़रीबी के कारण **माँ** एवं **बेटी** बहुत दुखी **रहती थीं।** (क्रिया - स्त्रीलिंग बहु वचन)

*लेकिन यदि उद्देश्य पृथक होता है तो क्रिया एकवचन हो जाती है :

i बड़े बाबू के पास एक बिल्ली और एक कुत्ता **है**। (उद्देश्य - स्त्रीलिंग और पुल्लिंग - क्रिया एकवचन)

ii उस घर में एक वृद्ध और एक लड़की **रहती है।** (उद्देश्य पुल्लिंग और स्त्रीलिंग - क्रिया एकवचन)

3 **समान लिंग** के दो या दो से अधिक एकवचन अप्रत्यय कर्ता यदि अप्राणीवाचक अथवा भाववाचक संज्ञाएँ हों और संयोजक समुच्चय बोधक (और, तथा, एवं) से जुड़े हों, तो क्रिया भी एकवचन होती है; जैसे :

i गहरे कुएँ में **बाल्टी** और **लुटिया डूब गई**। (अप्राणीवाचक संज्ञाएँ - क्रिया - एकवचन)

ii बाबा की मृत्यु की सूचना सुनते ही पूरे परिवार में **दुःख** और **शोक छा गया**। (भाववाचक संज्ञाएँ - क्रिया - एकवचन)

iii सकारात्मक सोच से **बल** और **विश्वास बढ़ता है**। (भाववाचक संज्ञाएँ - क्रिया - एकवचन)

4 यदि **भिन्न-भिन्न लिंग** के दो या अधिककर्ता (प्राणिवाचक संज्ञाएँ) **एकवचन** में हों और सम्मुचय बोधकों से जुड़ें हो तो क्रिया प्रायः पुल्लिंग बहु वचन में आती है जैसे :

i जंगल में आग लगते ही शेर और शेरनी भागने **लगे।** (क्रिया - पुल्लिंग बहु वचन)

ii घर में शादी का माहौल था। संगीता, बड़ी बहन और रूपेश सामान ख़रीदने बाजार **गए थे**। (क्रिया -पुल्लिंग बहु वचन)

iii इस वर्ष छुट्टियों में माँ, पिता और बेटा अमेरिका घूमने **जाएँगे।** (क्रिया पुल्लिंग - बहु वचन)

5 **भिन्न-भिन्न लिंग और वचन** के एक से अधिक प्रत्यय रहित कर्ता (संज्ञाएँ) सम्मुचयबोधकों से जुड़े हों, तो क्रिया के लिंग-वचन अंतिम कर्ता के अनुसार होते हैं; जैसे :

i आँखें, नाक और **गला दुख रहा है**। (अंतिम कर्ता पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii पिछले वर्ष राकेश और उसकी **बेटियाँ** विदेश घूमने **गई थीं।** (अंतिम कर्ता स्त्रीलिंग बहु वचन - क्रिया स्त्रीलिंग बहु वचन)

iii बालकनी में रस्सी पर धोती, कुर्ता, पेंट और **क़मीज़ें** सूख **रही हैं**। (अंतिम कर्ता स्त्रीलिंग बहु वचन -क्रिया स्त्रीलिंग बहु वचन)

6 यदि वाक्य में कर्ता के रूप में एक से अधिक सर्वनाम आएँ तो पहले मध्यम पुरुष फिर अन्य पुरुष और अंत में उत्तम पुरुष का प्रयोग होता है और क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार होती है; जैसे :

i परीक्षा के बाद तुम और **मैं** पिक्चर **देखेंगे।** (क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार)

ii परीक्षा सिर पर है, इस बार तुम, वह और **मैं** साथ मिलकर **पढ़ेंगे।** (क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार)

7 भिन्न पुरुषों के कर्ताओं में मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष ही होने पर क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार होती है जैसे :

i दान देने के लिए कल **तुम** और वे अनाथालय **चले जाना**। (क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार)

ii अपनी बात को दृढ़ता से रखने वह और **तुम** दोनों समर्थ **हो।** (क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार)

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

8 एक या अधिक (उद्देश्यों) कर्ताओं का कोई **समानाधिकरण** शब्द हो, तो क्रिया उसी के अनुसार होती है जैसे :

i भयंकर बाढ़ में घर-बार और जमीन **सबका सब बह गया।** ('सबका' समानाधिकरण शब्द पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii बस मान और ईमान **दोनों बच गए**। ('दोनों' समानाधिकरण शब्द पुल्लिंग बहुवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

iii बहुत पुरानी बात है एक गाँव में अमीर गरीब, छोटे और बड़े **सभी** मिल जुलकर **रहते थे**। ('सभी' समानाधिकरण शब्द पुल्लिंग बहुवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

9 एकाधिक कर्ता यदि विभाजक सम्मुचयबोधक 'या' से जुड़े हों, तो क्रिया अंतिम कर्ता के अनुसार होती है; जैसे :

i चचेरी बहन की शादी में दिल्ली शांतनु या उसकी बहन **मीता जाएगी।** (अंतिम कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन - क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन)

ii अस्पताल में बीमार माँ के पास गीता या **सिद्धार्थ रुकेगा।** (अंतिम कर्ता पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii कॉलेज में होने वाली बाधा-दौड़ प्रतियोगिता में लड़के या **लड़कियाँ दौड़ेंगी।** (अंतिम कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन - क्रिया स्त्रीलिंग बहुवचन)

10 द्वंद्व समास के अप्रत्यय कर्ता की क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में होती है जैसे :

i भारतीय संस्कृति में **माता-पिता** पूज्य **माने जाते हैं।** (क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

ii आज समाज में **बेटा-बेटी** एक समान **समझे जाते हैं**। (क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

iii बरसात में **नदी-नाले** उफान पर **थे।** (क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

11 जब जातिवाचक संज्ञा के स्थान पर **समुदायवाचक** संज्ञा एकवचन में आती है, तब क्रिया का लिंग-वचन समुदायवाचक संज्ञा के अनुसार होता है जैसे :

i इस बार दशहरे के मेले में बहुत **भीड़ थी**। ('भीड़' समुदायवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग एकवचन क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन)

ii अचानक कहीं से गायों का **झुंड आ गया**। ('झुण्ड' समुदायवाचक संज्ञा पुल्लिंग एकवचन क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii जब सैनिकों का **जत्था निकला**, तब लोगों ने उन पर पुष्प वर्षा की। ('जत्था' समुदायवाचक संज्ञा पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

(ख) कर्म और क्रिया की अन्विति

1 प्रत्यययुक्त कर्ता और प्रत्यय रहित कर्म होने पर क्रिया के लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं जैसे :

i गायन प्रतियोगिता में शेफाली ने **रिकॉर्ड तोड़ दिया**। (कर्म पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii गुस्से में आकर सखी ने **छड़ी तोड़ दी**। (कर्म स्त्रीलिंग एकवचन - क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन)

iii सुरेखा चिल्लाई, माँ ! कामवाली ने आज **दो गिलास तोड़ दिए**।" (कर्म पुल्लिंग बहुवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

iv बैरे को आज बहुत डाँट पड़ने वाली है, उसने प्लेटें **तोड़ दी हैं**। (कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन - क्रिया स्त्रीलिंग बहुवचन)

2 **भिन्न लिंगों** की एकाधिक संज्ञाएँ कर्म में एकवचन के आने पर क्रिया पुल्लिंग बहुवचन होती है, जैसे :

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

i इस बार पशु मेले में व्यापारी ने **गाय** और **बैल खरीदे**। (भिन्न लिंगी कर्म एकवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

ii सेठ ने गाँव से **नौकर** और **नौकरानी बुलाए**। (भिन्न लिंगी कर्म एकवचन - क्रिया पुल्लिंग बहुवचन)

3 **भिन्न लिंग** और **वचन** की एकाधिक संज्ञाएँ अप्रत्यय कर्म कारक में आती हैं, तो क्रिया के लिंग-वचन अंतिम कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे :

i पिता जी ने मेरे लिए **पेन** और दो **पुस्तकें खरीदीं**। (अंतिम कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन - क्रिया स्त्रीलिंग बहुवचन)

ii पिता जी ने **दो पुस्तकें** और **रबर** खरीदा। (अंतिम कर्म पुल्लिंग एकवचन - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii पिकनिक जाने के लिए हमने खाने का सामान और **चटाई इकट्ठी की**। (अंतिम कर्म स्त्रीलिंग एकवचन - क्रिया स्त्रीलिंग एकवचन)

4 प्रत्यय रहित कर्म में अनेक संज्ञाएँ यदि एक ही प्राणी अथवा पदार्थ को सूचित करें तो क्रिया एकवचन में आती है, जैसे :

i बच्चों ने **आम** और **सेब खाया**। (प्रत्यय रहित समान कर्म - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii जहाँ हमने नया घर लिया वहाँ एक अच्छा **मित्र** और **पड़ोसी** पाया। (प्रत्यय रहित समान कर्म - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

5 एकाधिक कर्म विभाजक समुच्चयबोधक से जुड़े हो तो क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार होती है, जैसे :

i शायद दफ़्तर से लौटते समय श्रीधर ने कॉपी या **रजिस्टर खरीदा होगा**। (विभाजक से जुड़े एकाधिक अप्रत्यय कर्म - क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार पुल्लिंग एकवचन)

ii सुष्मिता ने सहेली की शादी में नीला सूट अथवा नीली **साड़ी पहनी होगी।** (विभाजक से जुड़े एकाधिक अप्रत्यय कर्म - क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार स्त्रीलिंग एकवचन)

(ग) क्रिया एकवचन पुल्लिंग

कई स्थितियों में क्रिया सदैव एकवचन पुल्लिंग में रहती है; जैसे :

1 जब कर्ता का लिंग ज्ञात नहीं होता तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है, जैसे :

i वहाँ **कौन रहता है** ? (अज्ञात अप्रत्यय कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii छत पर **कौन खड़ा है** ? (अज्ञात अप्रत्यय कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii शहर के बाहर उस सुनसान भुतहा हवेली में **कौन रहता होगा** ? (अज्ञात अप्रत्यय कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

2 यदि अकर्मक क्रिया का उद्देश्य कर्ता प्रत्यय युक्त (परसर्ग युक्त) हो; जैसे :

i आज तो **हरीश को** हर हाल में **नहाना होगा**। (अकर्मक क्रिया का प्रत्यय युक्त कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते इतना थक गया हूँ कि **मुझसे** और नहीं **चला जाता।** (अकर्मक क्रिया का प्रत्यय युक्त कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

इतना शोर है कि **बच्चे से** सोया **नहीं जा रहा है।** (अकर्मक क्रिया का प्रत्यय युक्त कर्ता - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

3 यदि सकर्मक क्रिया का उद्देश्य कर्ता और मुख्य कर्म, दोनों सप्रत्यय (परसर्ग सहित) हो; जैसे :

i विद्यालय में **बालकों** ने **पाठ को पढ़ा**। (बहुवचन कर्ता और कर्म दोनों प्रत्यय युक्त - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii चित्र प्रदर्शनी में सीता **ने** एक विचित्र चित्र **को देखा**। (कर्ता और कर्म दोनों प्रत्यय युक्त - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii चित्रकूट के घाट पर **तुलसीदास ने** चंदन घिसकर **राम को लगाया।** (कर्ता और कर्म दोनों प्रत्यय युक्त - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

4 जब वाक्य अथवा अकर्मक क्रियार्थक संज्ञा उद्देश्य हो; जैसे :

i कई दिन से टाल रहा था, **हो सकता है** वह आज **चला जाए**। (क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii बादलों को देखकर **लगता है** कि आज पानी **बरसेगा।** (क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii समय से **सोना** स्वास्थ्य के लिए अच्छा **होता है।** (क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

5 जब प्रत्यय युक्त (उद्देश्य) कर्ता के साथ वाक्य अथवा क्रियार्थक संज्ञा कर्म हो; जैसे :

i गली में बच्चों ने बंदर का **नाचना देखा**। (सप्रत्यय कर्ता + क्रियार्थक संज्ञा - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

ii तमाम कोशिशों के बाद भी सुरेखा ने बात **बनाना** न **सीखा।** (सप्रत्यय कर्ता + क्रियार्थक संज्ञा - क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

iii मरीज़ की अवस्था देखकर डॉक्टर ने कहा कि मैं शाम को **आऊँगा।** (सप्रत्यय कर्ता + वाक्य क्रिया पुल्लिंग एकवचन)

(घ) विशेषण-विशेष्य की अन्विति :

1 विकारी विशेषण (आकारांत विशेषण) का लिंग-वचन, विशेष्य के अनुसार होता है; जैसे :

i वसंतपंचमी पर भारत में लोग पीले **वस्त्र**, पीली **साड़ी** और पीला **कुर्ता** आदि **पहनते हैं।**

ii अच्छा **लड़का**, अच्छी **लड़की**, अच्छे **बाल**, छोटा **बच्चा**, बड़ी **इमारत** आदि।

2 विशेष्य के स्थान पर एकाधिक संज्ञाएँ होने पर विशेषण निकटवर्ती संज्ञा के अनुसार होता है अर्थात् यदि अनेक विशेष्यों का एक विशेषण हो तो विशेषण के लिंगए वचन और कारकीय रूप तुरंत बाद में आने वाले विशेष्य के अनुसार होते हैं; जैसे :

i आज सभी पुराने **कपड़े** और सामान छाँटकर अलग निकालने हैं।

ii अच्छी **आदतों**, गुणों और कार्यों का सब जगह सम्मान होता है।

iii पहाड़ों के ऊँचे **शिखर** और चोटियाँ देखकर दिल खुशी से नाच उठा।

3 यदि एक विशेष्य के अनेक विकारी विशेषण हों, तो सब उस विशेष्य के अनुसार होते है, जैसे:

i कनॉटप्लेस की एक दुकान में सस्ती और अच्छी **पुस्तकें** मिलती हैं।

ii जितने भी गंदे और मैले **कपड़े** हैं, सब धोने के लिए डाल दो।

4 विधेयात्मक विशेषणों का प्रयोग भी ऊपर के नियमों के अनुसार ही होता है; जैसे :

i जहाँ **सामान** सस्ता और अच्छा मिलता है, वहीं से ख़रीदेंगे।

ii जहाँ **साड़ियाँ** सस्ती और अच्छी मिलती हैं, हम उसी दुकान में जाएँगे।

5 यदि कर्म सप्रत्यय (परसर्ग सहित) है, तो विधेयात्मक विशेषण एकरूप पुल्लिंग एकवचन रहता है; जैसे.

i इन **कपड़ों** को गंदा मत करो। (विशेषण पुल्लिंग एकवचन)

ii माँ ! इन **कुर्तों** और **पाजामों** को छोटा कर दो। (विशेषण पुल्लिंग एकवचन)

(ड) संज्ञा-सर्वनाम की अन्विति :

सर्वनाम का वचन और पुरूष उस संज्ञा के अनुरूप होना चाहिए, जिसके स्थान पर उसका प्रयोग हो रहा हो; जैसे :

i **मालती** ने कहा कि आज **वह** राजमा-चावल बनाएगी।

ii **लड़कियाँ** स्टेडियम जा रहीं हैं, **वे** वहाँ क्रिकेट मैच देखेंगी।

iii **सैनिक** देश के लिए लड़ते हैं, **उनके** लिए पूरा देश दुआ करता है।

2 आदरार्थ सर्वनाम का प्रयोग बहुवचन में होता है; जैसे :

i नरेंद्र मोदी विदेश यात्रा पर गए हैं। **वे** देश के प्रधानमंत्री **हैं।**

ii अंकल! **आप** कहाँ जा रहे **हैं** ?

3 हम, तुम, आप, वे, ये आदि अर्थ की दृष्टि से एकवचन के लिए भी प्रयुक्त होते हैं, लेकिन इनका रूप बहुवचन ही रहता है, जैसे :

i मामा जी **हम** भी **चलेंगे** कानपुर।

ii ऐसे ही **बुद्धू बने** रहोगे या **तुम** कुछ **सीखोगे** भी?

iii कल जिन हरिशंकर को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है, **वे** हमारे पड़ोस में ही रहते **हैं।**

च संबंधकारक और संबंधी की अन्विति :

संबंधकारक का लिंग, वचन और कारकीय रूप उसके (उत्तर पद) संबंधी के लिंग, वचन के अनुसार होता है, जैसे :

i कार रेस में हमेशा हरीश **की कार** ही जीतती है।

ii **आपके कपड़े** बहुत स्टाइलिश हैं।

ii राघव **के बंगले** में आज रात पार्टी है।

2 यदि संबंधी पद अनेक हों, तो संबंधवाची विशेषण परसर्ग अंतिम संबंधी के अनुसार होता है; जैसे

i **मेरे पिताजी** और माताजी भारत भ्रमण के लिए गए हुए हैं।

ii **उसकी बहन** और जीजा दोनों डॉक्टर हैं।

iii दादी **की आँख** और घुटनों में बहुत दर्द रहता है।

हिंदी वाक्यों में पदों की अन्विति अन्वय का विशेष महत्व है। अर्थ के अनर्थ से बचने के लिए तथा अपने भाव, विचारों को सही और उपयुक्त ढंग से संप्रेषित करने के लिए हिंदी पदों की अन्विति का सम्यक् ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

- *हिंदी भाषा का सरल व्याकरण, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 182*
- *हिंदी भाषा का सरल व्याकरण, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 181-182*
- *हिंदी भाषा का सरल व्याकरण, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ 184*
- *हिंदी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरू, पृष्ठ 479*
- *व्यावहारिक हिंदी व्याकरण तथा रचना, हरदेव बाहरी, पृष्ठ 182*